

अध्याय 15

नगरीय स्थानीय निकायों की सर्वोत्तम कार्य प्रणालियाँ

15.1 देश भर में नगरीय स्थानीय संस्थाएं नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए, वित्तीय प्रबंधन और प्रभावी सेवा प्रदाय सहित शहरी प्रशासन को बेहतर बनाने के प्रयास कर रही हैं।

अन्य राज्यों के मामले

15.2 मलयुक्त कीचड़ और गाद प्रबंधन पद्धति- वारंगल

वारंगल, हैदराबाद के बाद तेलंगाना का दूसरा सबसे बड़ा शहर है। इसे स्मार्ट शहर के रूप में चुना गया है। इस शहर की 8 लाख जनसंख्या में 1 लाख 90 हजार परिवार बसते हैं। शहर में स्वच्छता, मलप्रवाह पद्धति और खुले में शौच आम समस्याएं हैं। अस्वास्थ्यकर शौचालयों का उपयोग, मलयुक्त गाद और अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में जानकारी के अभाव ने स्थिति को और विषम बनाया है। ग्रेटर वारंगल नगर पालिक निगम ने कम लागत की वैकल्पिक स्वच्छता प्रौद्योगिकियों का उपयोग करते हुए अपनी कमियों एवं दोषों को दूर करने के लिए निवेश करने का फैसला किया।

मलयुक्त कीचड़ परिशोधन संयंत्र (एफएसटीपी) की स्थापना अम्मावारिपेटा में हनमकोंडा क्षेत्र में की गई है जो लगभग 20,000 घरों की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। कुल 0.98 एकड़ भूमि के 300 वर्गमीटर भूमि भाग पर संयंत्र की स्थापना की गई है, शेष भूमि में तालाब व पार्क भी बनाये गए हैं। इसकी क्षमता प्रति दिन 16000 लीटर कचरे का परिशोधन करने की है। इस संयंत्र को पीपीपी आधार पर संचालित किया जा रहा है। परियोजना के लिए तीन निजी संस्थाओं को चयनित किया गया है। प्रति ट्रक 5000 लीटर क्षमता के आठ ट्रक का उपयोग पिट्स (गड्ढों) को खाली करने के लिए किया जाता है। प्रति परिवार 1500 रुपये से 2000 रुपये के बीच शुल्क लिया जाता है। संयंत्र में सफाई की वैज्ञानिक प्रक्रिया के माध्यम से साफ पानी और जैविक-खाद प्राप्त होती है, जिसे पार्क में बागवानी के लिए उपयोग किया जाता है। परियोजना की प्रारंभिक लागत 1.2 करोड़ रुपये है, जिसमें दो वर्ष के लिए संचालन एवं अनुरक्षण लागत शामिल है।

15.3 उपचारित जल का बहुउद्देशीय उपयोग - जयपुर नगर पालिक निगम

जयपुर नगर पालिक निगम ने डेलावास - प्रताप नगर (सांगनेर) में 6 करोड़ 25 लाख लीटर क्षमता वाले सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट की स्थापना रु 28 करोड़ की लागत से की है। इस संयंत्र के संचालन के कारण, न केवल क्षेत्र के पर्यावरण में सुधार देखा गया है, वरन् भूमिगत जल को भी प्रदूषण से बचाया गया है। डेलावास संयंत्र परिसर में ही, इसी क्षमता के संयंत्र की एक और इकाई का निर्माण राजस्थान शहरी इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट प्रोजेक्ट द्वारा किया गया है। पूर्व में संयंत्र में परिशोधन प्रक्रिया के दौरान उत्सर्जित गैस का उपयोग करने का कोई प्रावधान नहीं होने से गैस को जलाया जाता था। इससे पर्यावरण में प्रदूषण बढ़ता था एवं निगम को वित्तीय लाभ भी नहीं मिल रहा था। बाद में संयंत्र द्वारा उत्सर्जित गैस का उपयोग करने के लिए निगम ने रु. 7.35 करोड़ की लागत से 1 मेगावाट क्षमता का एक बिजली उत्पादन संयंत्र भी लगाया है। अब गैस के उपयोग से उत्पन्न बिजली से सीवरेज उपचार संयंत्र की एक इकाई का संचालन किया जा रहा है, जिससे निगम को रु. 4 करोड़ की बचत हुई है। इसके अलावा, निगम ने उत्पन्न गैस को सिलिंडर में भरने के लिए पीपीपी आधार पर एक कार्य-आदेश दिया है, जिससे निगम को रु. 1.50 करोड़ की आय हो रही है।

इसके अलावा डेलावास जल उपचार संयंत्र की दोनों इकाइयों द्वारा 12 करोड़ 50 लाख लीटर परिशोधित जल, औद्योगिक उद्देश्यों के लिए विशेष आर्थिक क्षेत्र में आपूर्ति की जा रही है। परिणामस्वरूप भूमिगत जल के उपयोग में कमी आई है। इस जल का उपयोग निकटस्थ किसानों द्वारा सिंचाई के लिये और राजस्थान हाउसिंग बोर्ड द्वारा प्रतापनगर में पार्कों और उद्यानों में पानी देने के लिए किया जा रहा है। उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए, डेलावास सीवरेज उपचार संयंत्र इकाइयां सीवरेज पानी का परिशोधन, बिजली पैदा करने, किसानों और अन्य उपभोक्ताओं को सिंचाई के लिए निःशुल्क पानी मुहैया कराने, बिजली बचाने, निगम को कुछ राजस्व पैदा करने और कुछ हद तक पर्यावरण में सुधार जैसी बहुउद्देशीय सेवा प्रदान कर रही हैं। (चतुर्थ राज्य वित्त आयोग, राजस्थान का प्रतिवेदन)

15.4 सर्वोत्तम शहरी कार्यप्रणाली - छत्तीसगढ़

अम्बिकापुर में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन

छत्तीसगढ़ में व्यापक पैमाने पर गीले एवं सूखे कचरे को पृथक करने की प्रक्रिया अपनाई जा रही है। स्वच्छ भारत मिशन और मिशन क्लीन सिटी के अंतर्गत छत्तीसगढ़ में गीले एवं सूखे कचरे को अलग करने एवं ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में अम्बिकापुर एक आदर्श शहर बन गया है। इसके द्वारा अपनाई गई पद्धति राज्य एवं देश के सभी नगरीय निकायों के द्वारा मार्गदर्शक के रूप में अपनाई जा रही है। अपनाई गई पद्धति निम्नानुसार है-

- स्रोत पर पृथक्करण- सभी घरों को सूखे और गीले कचरे के लिए अलग-अलग रंगों की बाल्टियाँ दी गई है।
- प्रतिदिन प्रातः महिला स्व-सहायता समूह के सदस्य शहर के कचरे को घरों और अन्य प्रतिष्ठानों से इकट्ठा कर इसे अलग-अलग खानों वाले मिनी-ट्रक या रिक्शे में डालते हैं, जिससे कचरे का मिश्रण न हो।
- एकत्रित कचरे को ठोस तरल संसाधन प्रबंधन केन्द्र में ले जाया जाता है। जहां पुनः अलग हो सकने वाली उपयोगी वस्तुओं को अनुपयोगी वस्तुओं से अलग किया जाता है। कार्बनिक अपशिष्ट को भी अलग किया जाता है और आगे कंपोस्टिंग इकाइयों को भेजा जाता है जहां इसे कृषि उपयोगों के लिए जैविक खाद में परिवर्तित किया जाता है।
- इसके बाद, कचरा तीसरी बार अलग-अलग किया जाता है, जिससे सभी पुनः प्रयोज्य सामग्रियों को बचाया जा सके। अनुपयोगी कचरे को वैज्ञानिक तरीके से निपटाया जाता है। बचाए गई पुनः प्रयोज्य सामग्रियों को स्वयं सहायता समूह के सदस्यों द्वारा साफ किया और बेचा जाता है। बिक्री से प्राप्त राशि को समूह के सदस्यों के बीच वितरित किया जाता है।
- नगर पालिक निगम, अम्बिकापुर के अधिकारियों के साथ चर्चा के अनुसार, उनके द्वारा संसाधित कंपोस्ट खाद की मात्रा उनके स्थानीय उपयोग से अधिक है। इसलिए उनकी स्थानीय ब्रांड के साथ जुड़कर निश्चित कीमत पर प्रति माह लगभग 10 टन उर्वरक बाजार में उपलब्ध कराने की योजना है जिससे निगम के स्वयं के राजस्व स्रोत में वृद्धि होगी।

15.5 मलयुक्त कीचड़ परिशोधन संयंत्र

छत्तीसगढ़ राज्य भूमिगत सीवरेज प्रणाली की कमी की समस्या से जूझ रहा है। इसी तरह की समस्या से निपटने के लिए, बेंगलुरु से लगे हुए देवनाहल्ली शहर में मलयुक्त कीचड़ परिशोधन संयंत्र स्थापित किया गया है। इस पद्धति व तकनीक ने अच्छा कार्य किया है, जिसकी स्थानीय शहरी नियोजन संगठन के द्वारा प्रशंसा की गई है।

